सीखने के अवसर प्रदान करने हेतु सकारात्मक एवम सृजनात्मक परिवेश निर्माण एवम नेतृत्वकर्ता की भूमिका

लेखक :श्री मोहित कुमार

राजस्थान स्कूल लीडरशिप अकादमी

सीमेट, जयपुर, राजस्थान

भूमिका :-

बालक का मन बहुत ग्रहणशील होता है,इसलिए वे जिस प्रकार के वातावरण में रहते है,उसका प्रभाव उनके मन-मस्तिष्क पर पड़ना स्वाभाविक है। विद्यार्थी जीवन मे व्यक्तित्व विकास के निर्धारक संकेतको को निम्नानुसार समझ सकते है :-

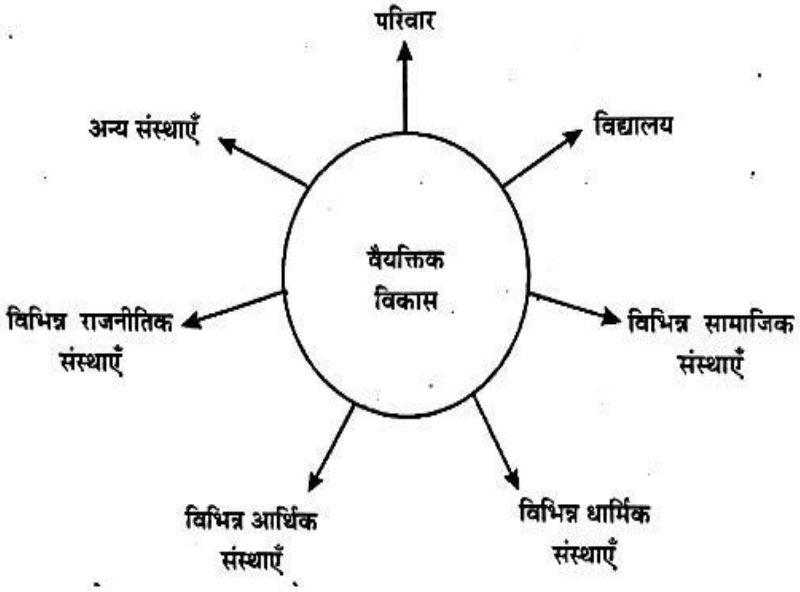

व्यक्तित्व के निर्धारकों में परिवार के बाद विद्यालय को दूसरा स्थान दिया गया है। बच्चा जब विद्यालयीय परिवेश में प्रविष्ट होता है तो उसका सामाजिक परिवेश और भी विस्तृत हो जाता है। माता-पिता के अलावा उसके लिए अब अध्यापक तथा मित्र भी प्रतिरूप का रूप ले लेते हैं।बालक इनका अनुकरण कर उसे अपने जीवन में उतारता है तथा वैसा बनने की कोशिश करता है। विद्यालय में वह शैक्षिक सफलता व असफलता का अनुभव प्राप्त करता है। जो बच्चे स्वयं को शैक्षिक दृष्टि से अच्छा समझते हैं, उन बच्चों का व्यवहार अधिक उपयुक्त होता है। बच्चे के व्यक्तित्व विकास पर स्कूल के साथी समूह का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जहाँ पर बच्चों और शिक्षकों के पारस्परिक सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण होते हैं. मनोरंजन व खेल-कूद के साधन उपलब्ध हैं तथा पाठ्यक्रम में बालक रूचि लेता है तो उन विद्यालयों के बच्चों में प्रायः अच्छे गुणों का विकास होता है। इस मॉड्यूल के माध्यम से हम जानने का प्रयास करेंगे :-

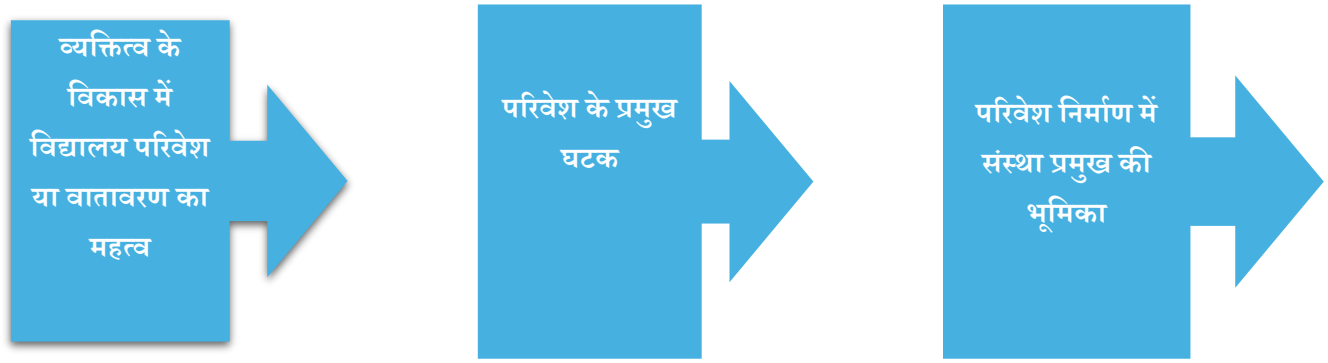

व्यक्तित्व के विकास में विद्यालय परिवेश या वातावरण का महत्व

स्कूल का वातावरण छात्रों के सीखने और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका उनके शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। एक सकारात्मक स्कूल वातावरण छात्रों को समस्याग्रस्त व्यवहार में शामिल होने से रोकने में मदद करता है और उनके समग्र कल्याण को बढ़ावा देता है। विद्यालय के वातावरण के निर्माण में मुख्य रूप से नेतृत्व का व्यवहार, अध्यापकों की नैतिकता, विश्वास का स्तर, संस्कृति, अभिभावकों का सहयोग, समुदाय का सहयोग, अध्यापक की प्रभाविकता, कार्यनिष्ठा, सन्तुष्टि तथा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धता मूल्यांकन,भौतिक संरचना आदि कारक प्रभावी होते हैं। यदि यह सभी अच्छी प्रकार से कार्य करते हैं या उच्च स्तर के हैं तो विद्यालय का वातावरण भी अच्छा होगा अन्यथा नहीं। अत: विद्यालय वातावरण भी वास्तव में विद्यालय के पर्यावरण तथा प्रधानाध्यापक, अध्यापक, छात्रों, कर्मचारियों, अभिभावकों, समुदाय आदि के आपस में अन्त:क्रिया व सम्प्रेषण के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है।

परिवेश के प्रमुख घटक

भौतिक परिवेश

समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर सतत विकास लक्ष्य 4 का लक्ष्य 4.ए बच्चों के लिए सुरक्षित, अहिंसक, समावेशी और प्रभावी शिक्षण वातावरण प्रदान करने का आह्वान करता है।'ऐसा पाया गया है कि जो स्थान सुरक्षित और स्वस्थ हैं, वे विद्यार्थियों के शैक्षणिक परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं । COVID-19 महामारी ने दिखाया कि खराब गुणवत्ता वाला बुनियादी ढांचा (उदाहरण के लिए वेंटिलेशन की कमी) COVID-19 संक्रमण को बढ़ा सकता है । अतः सीखने के वातावरण के

शिक्षा-विभाग,राजस्थान द्वारा समग्र शिक्षा के अन्तर्गत विद्यालय के भौतिक परिवेश निर्माण हेतु किये जा रहे सार्थक प्रयासों में खुले एवम हवादार विद्यालय परिसरों का निर्माण, ड्रिंकिंग वॉटर, टॉयलेट्स की सुविधा एवम आईसीटी लैब,साइंस-लैब,लाइब्रेरी, स्मार्ट क्लास रूम,पर्याप्त फर्नीचर आदि का विकास करना एक सराहनीय कदम है। इस क्षेत्र में ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से व्यक्तिगत एवम गैर सरकारी सहयोगी संस्थाएं भी आवश्यकतानुरूप सहयोग प्रदान कर रही है।

CSR के अंतर्गत राजस्थान शिक्षा विभाग के ज्ञान संकल्प पोर्टल एवम मुख्यमंत्री विद्यादान कोष के माध्यम से 5

दैनिक भास्कर अलवर भास्कर 15-06-2020

तिजारा का राजकीय बालिका स्कूल नए रूप में दिखने लगा

सरकारी स्कूल का रूप बदला तो बढ़ गया बालिकाओं का 67% नामांकन

भास्कर संवाददाता | अलवर

यूं तो अलवर से दिल्ली के बीच कई मील के पत्थर हैं। इनकी अलग-अलग खासियत भी है, लेकिन हाल ही एक स्कूल का बदला स्वरूप इस पूरे इलाके में माइल स्टोन बन चुका है। जी हां, बात हो रही है तिजारा के राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की। जिला मुख्यालय से दिल्ली मार्ग पर 55 किलोमीटर दूर स्थित तिजारा अब तक जैन मंदिर के लिए देशभर में अपना नाम रखता है, लेकिन पिछले दिनों यहां की बालिकाओं के सरकारी स्कूल में हुए नवाचार ने इसे दुबारा देश के नक्शे पर अलग पहचान दिलाई है। कक्षा 1 से 12 तक संचालित इस स्कूल का नामांकन 623 है। आकर्षक मुख्य दरवाजा और चारदीवारी पर सरकारी योजनाओं और समाज को प्रेरणा देने वाले चित्र राह चलते लोगों का ध्यान खींचने के लिए काफी हैं। स्कूल के अंदर प्रवेश करते ही दूसरे मुख्य द्वार पर पेंट से बने इंडिया गेट और भारत की ऐतिहासिक धरोहरों का कोलाज और सामने वाली दीवार पर बुलेट ट्रेन का चित्र देखकर सम्पूर्ण स्कूल देखने की इच्छा जागृत होती है। दूसरे दरवाजे से अंदर प्रवेश करते ही

राबाउमा विद्यालय तिजारा का नया रूप।

प्रांगण को देखकर तो कोई भी व्यक्ति चौंक पड़ता है। स्कूल में आधुनिक और गुरुकुल परम्परा का मिश्रण दिखाई देता है। इस स्कूल परिसर के अंदर के प्रांगण को 6 हिस्सों में बांटा हुआ है। इसमें 5 तत्वों के नाम पर अलग-अलग पार्क विकसित किए हैं एवं छठवें स्थान पर छोटे बच्चों का पार्क जिसमें उनको खेलने को प्ले एलीमेंट और अलग से आरोही और अवरोही क्रम को सिखाती हुई एक आकर्षक फिसलपट्टी बच्चों को आनंदित करती है। इसके पीछे बड़े हॉल की सामने वाली दीवार पर गुरुकुल का विहंगम दृश्य मन को मोह लेता है।

300 हरेभरे पेड़ों से अटा

स्कूल परिसर : स्कूल परिसर में लगभग 300 हरेभरे पेड़ हैं। इनमें 10 वैरायटी के शहतूत, बड़, पीपल, अशोक, चम्पा और नीम पेड़ भी लगे हुए हैं।

5 साल पहले स्कूल में थे 374 नामांकन, अब 623 : सजा-धजा स्कूल का मंच और प्रार्थना स्थल बच्चों के कोलाहल की बाट जोह रहा है। प्रिंसिपल मीरा मुखीजा ने बताया कि 2015 में जब यहां कार्यग्रहण किया तो स्कूल अच्छी स्थिति में नहीं था। कमरों की छत टपकती और चारदीवारी जगह जगह से टूटी पड़ी थी। उस समय नामांकन 374 था। श्रीराम पिस्टंस एण्ड रिंग्स लिमिटेड पथरेडी को विद्यालय गोद दिया तो आज सभी सुविधाओं सहित सम्पूर्ण विद्यालय परिसर चाइल्ड फ्रेंडली बन चुका और नामांकन 374 से बढ़कर 623 हो गया है।

12वीं का रिजल्ट लगातार 100 प्रतिशत, 3 छात्राएं जा चुकी विदेश : 2015 से ही लगातार 12वीं क्लास का परीक्षा

विद्यालय की 50 बालिकाओं स्काउटिंग में राष्ट्रपति पुरस्क और 472 बालिकाओं को रा पुरस्कार मिल चुका है। सा ही विद्यालय को स्काउटिंग प्रधानमंत्री शील्ड और 3 ब मेरिट अवार्ड मिला है। जि स्तर पर पर्यावरण पुरस्कार मिला है। स्कूल की 3 बेटियों साउथ कोरिया, पाकिस्तान अ बंग्लादेश जाने का मौका मिला।

स्कूल की काया पलटने हुए डेढ़ करोड़ खर्च : स्कू के बदले रूप, सौंदर्यकरण अ बाला कार्य में समग्र शिक्षा ईंजीनियर राजेश लवानिया स सहयोग मिला है। श्रीराम पिस्टन एण्ड रिंग्स लि. के उपमहाप्रबंध दिलीप तिवारी ने बताया कि अ तक लगभग 1.5 करोड़ रु सीएसआर अंतर्गत इस विद्याल में इंफ्रास्ट्रेक्चर व रिनोवेशन अन्य कार्यों में खर्च किया गया अलवर जिले के सरकारी स्कू के इंफ्रास्ट्रेक्चर में नवाचार वाले इंजीनियर राजेश लवानि कहते हैं कि तिजारा ब्लॉक भिड़सी स्कूल के रिनोवेशन समय श्रीराम पिस्टन के अधिका अनिल यादव से मुलाकात हुई अ भिड़सी स्कूल के सौंदर्यकरण ए नवाचार से प्रेरित होकर तिजा के बालिका स्कूल में सरप

केस स्टडी : 01

अलवर जिला मुख्यालय से देहली मार्ग पर 55 किलोमीटर की दूरी पर स्थित तिजारा ब्लॉक मुख्यालय जैन मंदिर के लिए प्रसिद्द है लेकिन अब यहाँ की बालिकाओं के लिए सरकारी स्कूल भी देखने लायक है कक्षा 1 से 12 तक संचालित यह स्कूल जिसमें नामांकन 623 है | अंदर प्रवेश करते ही दूसरे मुख्य द्वारा पर पैंट से बने इंडिया गेट और भारत की ऐतिहासिक धरोहरों का कोलाज और सामने वाली दीवार पर बुलेट ट्रेन का चित्र देखकर सम्पूर्ण स्कूल को देखने की इच्छा जागृत होती है | दूसरे दरवाजे से अंदर प्रवेश करते ही अंदर के हरे भरे और कलरफुल प्रांगण को देखकर तो कोई भी व्यक्ति चॉक पड़ता है यहाँ आधुनिक और गुरुकुल परम्परा का समिश्रण दिखाई देता है इस स्कूल परिसर के अंदर के प्रांगण को 6 हिस्सों में विभाजित किया हुआ है जिसमें 5 तत्वों के नाम पर अलग- अलग पार्क विकसित किए गए हैं एवं छठवें स्थान पर छोटे बच्चों का पार्क जिसमें उनको खेलने को प्ले एलीमेंट और पृथक से आरोही और अवरोही क्रम को सिखाती हुई एक आकर्षक फिसलपट्टी बच्चों को आनंदित कर देती है। इसके ठीक पीछे बड़े हाल की सामने वाली दीवार पर गुरुकुल का विहंगम दृश्य मन को मोह लेता है | पार्कों में पेड़ों के नीचे बच्चों को बैठने के लिए लहरदार रंगीन बेंच भी कुछ पल बैठने का निमंत्रण देती हैं | एक पार्क से दूसरे पार्क और कक्षा कक्षों के बरामदों तक पहुँचने के लिए आकर्षक पाथ वे और इनके दोनों ओर बनी छोटी कलरफुल चारदीवारी तथा बड़ी संख्या में बने माइल स्टोन प्रसन्नता देने के साथ बहुत सारा ज्ञान उड़ेलते नजर आते हैं |

आज सम्पूर्ण परिसर में लगभग 300 हरे-भरे पेड़ जिनमें 10 बैरायटी के शहतूत, बड़,पीपल,अशोक,चम्पा और 21 नीम के पेड़ों के साथ अन्य कीमती पेड़ भी लगे हुए हैं| विद्यालय की प्रधानाचार्य मीरा मुखीजा ने बताया कि 2015 में जब यहाँ कार्य ग्रहण किया तो स्कूल की स्थिति ठीक नहीं थी कमरों की छत टपकती थी और चारदीवारी जगह जगह से टूटी पड़ी थी जिससे असामाजिक तत्व रात्रि को यहाँ मदिरा सेवन करते थे और विद्यालय परिसर में शौच करते थे | शौचालय और पेयजल व्यवस्था भी नाम मात्र की थी और नामांकन 374 था उन्होने श्रीराम पिस्टन कंपनी को विद्यालय गोद दिया तो आज सम्पूर्ण विद्यालय परिसर चाइल्ड फ्रेंडली बन चुका है और नामांकन 374 से बढ़कर 623 हो गया है | 2015 से ही लगातार 12वीं क्लास का परीक्षा परिणाम 100% रहा है विद्यालय की 50 बालिकाओं को स्काउटिंग में राष्ट्रपति पुरस्कार और 472 बालिकाओं को राज्य पुरस्कार मिल चुका है साथ ही विद्यालय को स्काउटिंग में प्रधानमंत्री शील्ड और तीन बार मेरिट अवार्ड मिला है।

परिवेश के प्रमुख घटक

मनोवैज्ञानिक सृजनात्मक परिवेश

विद्यालय में मनोवैज्ञानिक परिवेश क्या है?

विद्यालय का मनोवैज्ञानिक परिवेश का संबंध उस प्रेरणा से है जो विद्यालय में विद्यार्थी के मन पर प्रभाव डालती है। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों के प्रति अध्यापक का व्यवहार विद्यालय में कुछ क्रिया करने या न करने के लिए विद्यार्थी के लिए प्रोत्साहन के रूप में कार्य करता है।

मनोवैज्ञानिक परिवेश विद्यार्थी को कैसे प्रभावित करता है?

अनुसंधान दर्शाते हैं कि विद्यालय का मनोवैज्ञानिक परिवेश, विद्यार्थी पर और अधिगम प्रक्रिया पर सबसे अधिक शक्तिशाली प्रभाव डालता है। आचरण की प्रत्याशाएँ, पुरस्कार और दंड की क्रियाविधि के स्वरूप और अधिगम आबंधों आदि का भी विद्यार्थी पर तथा अधिगम की प्रक्रिया पर भी प्रभाव होता है।

मनोवैज्ञानिक नकारात्मक परिवेश

उदाहरण के लिए, ऐसे विद्यालय की कल्पना कीजिए, जहाँ विद्यार्थी को धमकी भरी स्थिति में रखा जाता है। इस स्थिति के परिणाम शिक्षार्थी में अवांछित व्यवहार, जैसे परीक्षाओं से बचना, दोषपूर्ण प्रश्नों के लिए अध्यापकों पर आरोप लगाना, गलत कार्यों में संलग्न होना आदि हो सकते हैं। इसलिए विद्यालय में निर्मित मनोवैज्ञानिक परिवेश का विद्यार्थियों पर प्रभाव पड़ेगा।

केस स्टडी : 02

दूसरे उदाहरण के तौर पर उदयपुर जिले में आदिवासी बाहुल्य कोटड़ा ब्लॉक के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के संस्था प्रधान सुन्दर लाल अहारी का बालकों के साथ आत्मीय एवम स्नेहपूर्ण व्यवहार बच्चों के विद्यालय से जुड़ाव एवम नियमित विद्यालय आने का एक महत्वपूर्ण कारण है । श्री सुंदरलाल का स्थानीय बालकों व अभिभावकों से स्थानीय बोली में सम्प्रेषण करना, उन्हें विद्यालय आने के लिए प्रोत्साहित करना,बेहतर प्रदर्शन के लिए सराहना करना, सौम्य,सरल एवम मृदु भाषा शैली का प्रयोग करना,गीत-संगीत को शिक्षण में शामिल करना,परस्पर तुलना से बचना,स्थानीय समस्याओं के समाधान में अपेक्षित सहयोग प्रदान करना एवम सीखने सिखाने की प्रक्रिया में गतिविधि आधारित शिक्षण को शामिल करना आदि ऐसे अनेक कारण है जिनसे स्थानीय विद्यालय में सकारात्मक एवम सृजनात्मक मनोवैज्ञानिक परिवेश निर्माण में सहायता मिलती है।

गीत के माध्यम से बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक करते हुए

विद्यालय में सकारात्मक एवम सृजनात्मक मनोवैज्ञानिक परिवेश निर्माण की आवश्यक शर्तें

विद्यालयी वातावरण जैसे भेदभाव,छुआछूत ,अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अभाव, इच्छा दमन , पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का अभाव, भय ,आंतक आदि तत्व बालक के मानसिक स्वास्थ्य को खराब कर सकते हैं। बालकों की प्रगति एवं उन्नति के लिए उनके

अध्यापक का व्यवहार नियंत्रित होना चाहिए एवं विद्यार्थी को सदैव प्रोत्साहित करते रहना चाहिए।

विद्यार्थी को उसकी रूचि के अनुसार पाठ्यक्रम मिलना चाहिए , ऐसा होने पर , वह खुश रहते हैं और उनका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

जो शिक्षण विधियाँ बालकों की रूचियों,स्थायी भावों,चरित्र,बुद्धि,कल्पना स्मृति आदि मानसिक शक्तियों तथा शारीरिक शक्तियों को विकसित करती हैं,वे बाल-केन्द्रित शिक्षण विधियाँ कहलाती है। जो अधिक बाल केन्द्रित होगी,वह उतनी ही बालकों के मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी होंगी।

शिक्षण अधिगम को केंद्र में रखते हुए मनोवैज्ञानिक सृजनात्मक परिवेश निर्माण हेतु शिक्षा विभाग,राजस्थान के प्रयास

ABL ROOM

निःशुल्क एवं बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 (RTE) की धारा-29 के अनुसार शिक्षण गतिविधि आधारित होना चाहिए। धारा-23 के अनुसार प्रत्येक बच्चे के पढ़ने के स्तर और गति का आकलन कर उसके आधार पर शिक्षण योजना तैयार कर तदनुरूप शिक्षण कार्य करवाया जाए। इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों में से एक प्रमुख प्रयास गतिविधि आधारित अधिगम (ABL) है। इस प्रक्रिया का मुख्य आधार यह है कि प्रत्येक बच्चा महत्वपूर्ण है एवं बच्चा अपने स्तर के अनुसार अपनी गति और रूचि से सीखता है इसलिए बच्चे की सीखने की गति और इनके शैक्षिक स्तरानुसार गतिविधियों के नाध्यम से सीखने सिखाने की प्रक्रिया की जाए तो बच्चे का सीखना सुनिश्चित होगा। इसी उद्देश्य को केंद्र में रखते हुए समग्र शिक्षा के अन्तर्गत समस्त राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवम चयनित प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक गतिविधि आधारित शिक्षण की सुनिश्चितता के लिए ABL ROOM विकसित किये गए है और साथ ही तीन विषयों (हिन्दी/अंग्रेजी/गणित) पर आधारित ABL किट भी शिक्षकों को उपलब्ध करवाए गए है।

NO BAG DAY

विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं अन्तर्निहित क्षमताओं को पहचान कर अध्ययन अध्यापन के पारम्परिक तरीकों से इतर सहगामी क्रियाओं के माध्यम से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आनंददायी बनाने के उद्देश्य से शिक्षा विभाग द्वारा नो बैग डे कार्यक्रम को शुरू किया गया है,जिसके अंतर्गत प्रत्येक शनिवार को कक्षा 1 से 12 के विद्यार्थियों को अलग-अलग समूहों (अंकुर/प्रवेश/दिशा/क्षितिज/उन्नति) में वर्गीकृत कर प्रत्येक शनिवार को 5 थीमों (राजस्थान को जानो/भाषा कौशल विकास/खेलेगा राजस्थान-बढ़3गया राजस्थान/में भी बनूँगा वैज्ञानिक/बाल-सभा मेरे अपनो के साथ) पर विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

RAJASTHAN KE SHIKSHAK SITAARE

राज्य के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के क्षमता संवर्द्धन एवम उनके द्वारा विद्यालयों में शैक्षणिक परिवेश निर्माण हेतु किये जा रहे प्रयासों के उन्नयन हेतु शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा "राजस्थान के शिक्षक सितारें" कार्यक्रम की शुरुआत की गयी है। इसके अन्तर्गत शिक्षा विभागीय अधिकारियों एवं शिक्षकों के मध्य सीधा संवाद स्थापित होता है। साथ ही इस मंच पर शिक्षक समुदाय स्वयं के अनुभवों को अन्य शिक्षकों के साथ ऑनलाइन वेबिनार के माध्यम से साझा कर रहें है।

RKSMBK कार्यक्रम

कोरोना महामारी के कारण हुए लर्निंग लॉस को पूरा करने के लिये कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों हेतु रेमेडिएशन कार्यक्रम 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम' शुरू किया गया, जिसके अंतर्गत आयोजित ब्रिज कोर्स में विद्यार्थियों को दक्षता आधारित, आसान व आनंदपूर्ण शिक्षण विधि से अध्ययन करवाया जा रहा है एवम वर्क बुक आधारित रेमेडीएशन कार्य भी किया जा रहा है। इसके साथ ही भविष्य की आवश्यकताओं को देखते हुए शिक्षकों को तकनीकी रूप से दक्ष बनाने के उद्देश्य से RKSMBK APP भी विकसित की गयी है,जिसके माध्यम से शिक्षक दैनिक/साप्ताहिक पाठ योजना बनाकर ओसीआर तकनीक पर आकलन एवम मूल्यांकन का कार्य भी कर रहे है।

शिक्षण अधिगम को केंद्र में रखते हुए मनोवैज्ञानिक सृजनात्मक परिवेश निर्माण हेतु शिक्षा विभाग,राजस्थान के प्रयास

गतिविधि आधारित शिक्षण।

नो बैग डे गतिविधि

(ABL KIT एवम ABL रूम की सहायता से)

सृजनात्मक एवम सकारात्मक शैक्षणिक परिवेश निर्माण में संस्था प्रमुख की भूमिका

"शैक्षणिक संस्थाओं के परिवेश में, नेतृत्व का कहीं अधिक विचारशील, चिन्तनशील और ज्ञान-आधारित होना जरूरी है (शैक्षणिक उद्देश्यों और कार्यविधियों की गहरी साझा समझ ही एक साझे दृष्टिकोण का आधार बनाती है)। इसका अर्थ है कि स्कूली नेतृत्व को भी किसी एक व्यक्ति में केन्द्रित होने के बजाय विकेन्द्रित और सहयोगपूर्ण होना चाहिए"

शैक्षिक संस्थान में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उस संस्था के प्रधान की होती है, क्योंकि शिक्षण संस्थाओं में नीतियों को सबसे निचले स्तर पर क्रियान्वित करने हेतु यही व्यक्ति उत्तरदायी होता है। अन्य संस्थाओं की भाँति शिक्षण संस्थाओं का नेता या प्रधान प्राचार्य होता है। वह संस्था के प्रशासन एवं प्रबंध का मुख्य घटक होता है। शिक्षण संस्थाओं की कार्यकुशलता, गुणवत्ता स्तर तथा वातावरण प्राचार्य (प्रधान) के व्यक्तित्व, वृत्तिक दक्षता तथा कार्य कौशल पर निर्भर करती है। एक संस्था प्रधान का व्यक्तित्व अपने सभी अध्यापकों को अभिप्रेरित कर उन्हें उद्देश्यों व लक्ष्यों की पूर्ति व कर्त्तव्यपालन में सहायता प्रदान करता है।

संस्था प्रधान संस्था के प्रशासन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। यह शिक्षण संस्थाओं में ऐसी परिस्थितियों को उत्पन्न करता है, जिससे संस्था के शिक्षक एवं छात्र दोनों रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्य कर सके।

विद्यालय नेतृत्व के लिए पांच लक्ष्य

विद्यालय में सकारात्मक एवम सृजनात्मक परिवेश निर्माण हेतु आवश्यक योजना निर्माण करना।

उपलब्ध संसाधनों को चिन्हित कर अधिकाधिक उपयोग को सुनिश्चित करना।

समुदाय का विद्यालय के साथ सक्रिय जुड़ाव सुनिश्चित करते हुए विकास में भागीदारी बनाना।

सहगामी शिक्षकों के क्षमता संवर्द्धन एवम कौशल विकास हेतु मार्गदर्शन प्रदान करना।

विद्यार्थियों के लिए सकारात्मक-सहयोगात्मक-समावेशित एवम रचनात्मक अधिगम वातावरण का

"केवल थोड़े से स्कूल ही क्यों उन बाधाओं से पार पाने में सफल होते है जिनका सामना अधिकांश विद्यालयों को करना पड़ता है? प्रभावी विद्यालय नेतृत्व और समर्पित एवम उत्साही शिक्षकों का दल तथा सहयोगी समुदाय विद्यालय में सकारात्मक एवम

विद्यालय में सकारात्मक एवम रचनात्मक परिवेश निर्माण हेतु अनुशासित वातावरण की स्थापना एक पूर्व शर्त है एवम इसके लिए संस्था प्रमुख एवम शिक्षकों का समय का पाबन्द होना अनिवार्य है। शोध अध्ययनों में यह तथ्य देखने मे आया है कि जिन विद्यालयों में संस्था प्रमुख समय के पाबन्द होते है वहाँ शिक्षक एवम विद्यार्थी मनोवैज्ञानिक रूप से अनुशासित व्यवहार का प्रदर्शन करने लगते है।

विद्यालय में व्यवस्थित एवम कुशल प्रबन्धन हेतु संस्था प्रमुख द्वारा अकादमिक एवम प्रशासनिक पद्धतियों,योजनाओ का क्रियान्वयन एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके अंतर्गत दैनिक प्रातः सभा,विद्यार्थियों से सम्बन्धित दैनिक/मासिक/वार्षिक दस्तावेजों यथा शिक्षक/छात्र उपस्थिति रजिस्टर,प्रवेश फॉर्म,समय सारिणी निर्धारण आदि का ऑनलाइन एवम ऑफलाइन अपडेशन होना अपेक्षित है। साथ ही पाठ्य-पुस्तकों, यूनिफॉर्म,लाभकारी योजनाओ का समय पर वितरण,मध्याह्न भोजन के व्यवस्थित आयोजन,सह-शैक्षणिक गतिविधियों के आयोजन के साथ साथ नियमित समीक्षा बैठकों का आयोजन भी महत्वपूर्ण कारक है।

शोध दर्शाते हैं कि समर्पित संस्था प्रमुख विद्यार्थी हितों को केंद्र में रखते हुए सकारात्मक परिवेश निर्माण के लिए विद्यालय समय के बाद भी अतिरिक्त समय देकर वांछित प्रयास करते है। ऐसे प्रयास संस्था प्रमुख के संस्था के प्रति समर्पण भाव को परिलक्षित करते है। विद्यालय समय पश्चात विद्यार्थियों को अतिरिक्त समय देना अथवा अवकाश के दिनों में भी कौशल निर्माण हेतु शिविरों का आयोजन,अधिगम सामग्री निर्माण करना,कमजोर छात्रों को विशेष रूप से सहायता प्रदान करना आदि ऐसे बहुत से कारक है जो परिवेश निर्माण को प्रभावित करते है।

विद्यालय में भौतिक एवम सकारात्मक सामाजिक परिवेश निर्माण में विद्यालय विकास एवम प्रबन्धन समिति की महती भूमिका रहती है और इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका संस्था प्रमुख की होती है,क्योंकि संस्था प्रधान की सक्रियता एवम स्थानीय समुदाय के साथ जुड़ाव ही एसडीएमसी एवम विद्यालय के मध्य जुड़ाव को सुनिश्चित करता है। यह जुड़ाव ही विद्यार्थियों का नामांकन एवम उपस्थिति को बढ़ाने में,बुनियादी सुविधाएं एवम आवश्यक संसाधन जुटाने,आर्थिक स्रोत प्रदान करने में सहायक भूमिका निभाता है।

स्कूल नेतृत्व विद्यालय में न केवल सकारात्मक एवम सृजनात्मक परिवेश निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है,अपितु गुणवत्तापूर्ण शिक्षण में भी महती भूमिका निभाता है। जिन विद्यालयों में संस्था प्रमुख केवल कार्यालय प्रबन्धन तक सीमित रहते है और अकादमिक कार्यों में रुचि नहीं लेते है वहां शिक्षण अधिगम एवम विद्यालय संचालन एक औपचारिकता मात्र बनकर रह जाता है,जिसका सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। ऐसी संस्थाओं में शिक्षक बिना लक्ष्य निर्धारण एवम कार्य योजना के शिक्षण कार्य करवाते है और इसी कारण विद्यार्थी आकलन के समय आशानुरूप परिणाम नहीं आते है। जिन संस्थाओं में संस्था प्रमुख प्राथमिक, उच्च प्राथमिक ,माध्यमिक एवम उच्च माध्यमिक कक्षाओं की कक्षावार/विषयवार दक्षताओं/पाठ्यक्रम को लक्षित करते हुए शिक्षकों के साथ चर्चा कर योजना निर्माण करते है और वार्षिक/मासिक/पाक्षिक /साप्ताहिक/दैनिक शिक्षण योजना एवम आकलन की प्रक्रिया निर्धारण को गम्भीरता से लेते है,वहाँ अकादमिक स्तर पर रचनात्मक शैक्षणिक परिवेश निर्माण में सहायता मिलती है तथा विद्यार्थियों का प्रदर्शन सक्रिय रूप से कक्षा स्तर के अनुरूप देखने को मिलता है।

अतः ऐसे लगभग सभी कारक जो 'सफल' विद्यालय को 'अन्य' विद्यालयों से अलग करते है,संस्था प्रमुख द्वारा निर्मित,प्रभावित और सन्चालित किए जा सकते है। इस अर्थ में स्कूल नेतृत्व अपने विद्यालय में सकारात्मक एवम सृजनात्मक परिवेश निर्माण के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण अधिगम को सन्चालित करने में भी अग्रणी भूमिका निभाता है।

निष्कर्ष :-

तो जैसा कि हम देख सकते हैं कि एक बालक के ज्ञान कौशल,विचार निर्माण एवम व्यक्तित्व विकास पर सर्वाधिक प्रभाव परिवार के पश्चात विद्यालय के वातावरण का पड़ता है। विद्यालय परिवेश के अन्तर्गत सकारात्मक एवम रचनात्मक अवसरों की उपलब्धता जितनी अधिक प्रभावी होगी उतना ही अधिक बालक के व्यक्तित्व विकास उत्तरोत्तर प्रगति होगी। विद्यालय में सकारात्मक एवम सृजनात्मक परिवेश को प्रभावी बनाने में विद्यालय नेतृत्व न केवल सार्थक भूमिका का निर्वहन करता है,अपितु एक विद्यालय को आदर्श विद्यालय के रूप में स्थापित करने में भी सक्रिय रहता है।

"एक विद्यालय में सकारात्मक एवम सृजनात्मक परिवेश निर्माण की उपलब्धता ही बालक के व्यक्तित्व विकास के भविष्य की नींव रखने का कार्य करती है"

लेखक : मोहित कुमार
रा. उ. मा . वि . दामोदरपूरा , जयपुर